

प्राचीन भारतीय

निवास शहर	: ८५१-१६.७१.२६४/-
वाराणसी शहर	: ८५१-१०.६३.११०/-
दिल्ली शहर	: ८५१-१६.६२.८६१/-
काशी	: दिल्ली शहर

हर शिव चित्तेन प्रसादी गति गमा प्रसादं दिवपाति ।

१०८५ अस्ति नामा विजय

新嘉坡人

2023-03-2

卷之三

25000

25000

25000

25000



0400 013149

परगना निवासी, तहसील व ज़िला लखनऊ के बिन्दे आगे  
विशेषज्ञता रखा गया है। उम्र मध्यम ४५ वर्ष के पैकड़, नवजाम  
निवासी—२५१, चम्लाका बालोनी, डलीगंज, नवनाथ, एवं रुद्रांग  
निवासी—गाँव—गिलाइ गिलाइ, पोरह—गोपीनाथ, ज़िला—फतेहपुर  
जिसे आगे बोला जाता गया है, के गाँव निवासी किया गया।

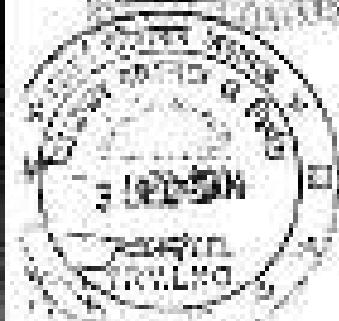
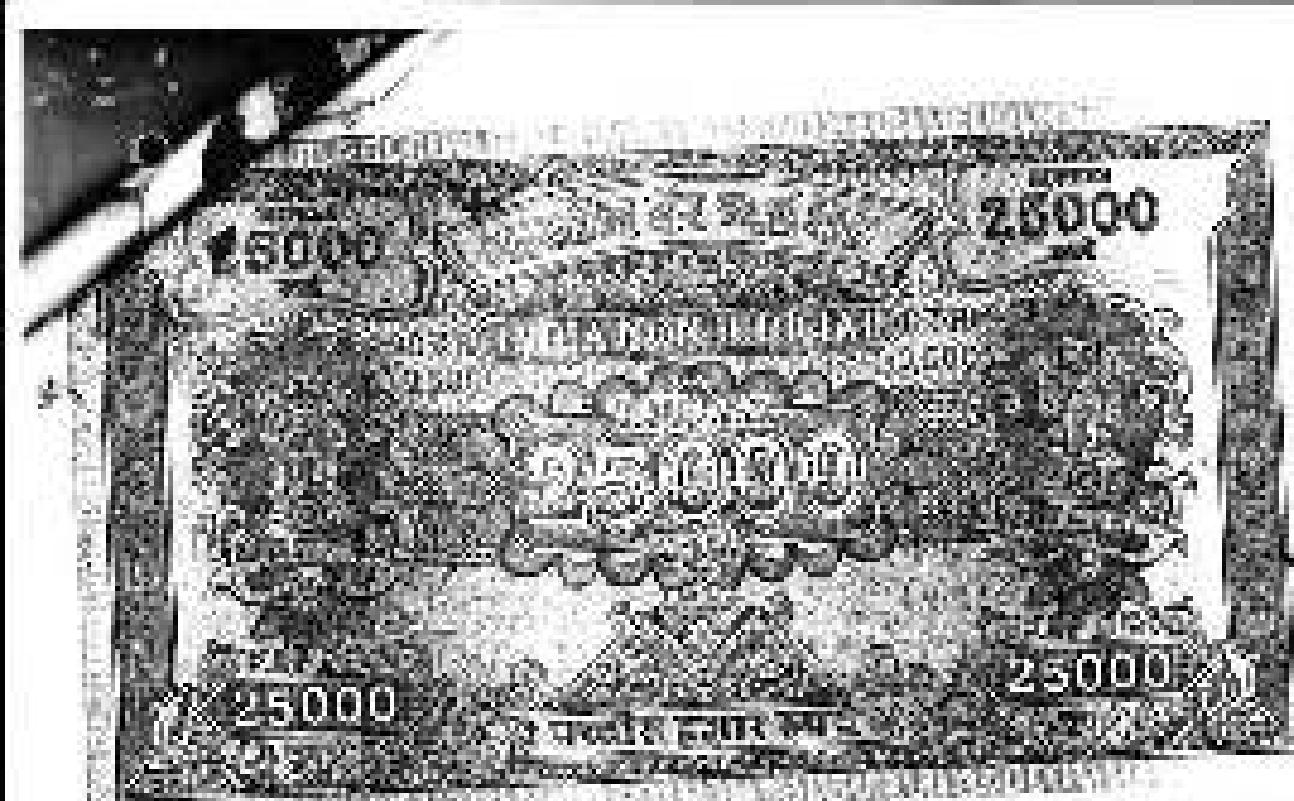
इस के विशेषज्ञता गुण अवश्य नं० १३१ रुपया ०.१८३  
मेट्रेट, अवश्य नं० १३० रुपया ०.२७४ मेट्रेट, अवश्य नं० १२८  
रुपया ०.३१६ मेट्रेट युक्त रुपया ०.१८१ मेट्रेट, निवासी यम  
मुकामान गाँव युसवाल, परगना—निवासी, तहसील व ज़िला

गिलाइ गिलाइ गिलाइ

२५१

निवासी—गिलाइ

निवासी



जन्मनाल, का भालिक, बालेन व कानिंह के लक्ष्य उपर्युक्त  
राज्यालय पट्टवार्षिक छाता अस्सी सग राज्या २२ के अनुसार  
जलन मृत्यु विद्वानान् वो जाय का जपल दरापद दाज्ञा अपीलेश्वरी  
मै लो गया है। विद्वानान् अपनी युज्ञ भूमि द्वारा वो इस विकाय  
विलोक हरा विलोक कर दे है। विद्वानान् द्वारान् समृद्धि भूमि  
के भालिक, बालेन व कानिंह के १०५ लक्ष्यान् समय मै जलन भूमि  
के भूषि है, तोर नह कि विद्वानान् यह भौतिक करता है कि  
जमडीवा रायान भूमि लासी फ़कार के खारों तो गुज्जा एवं पाला व  
जाफ़ है लक्षा विद्वानान् ने उसे इस विकाय के गहर कही तथ,  
जिस विद्वान् द्वा अनुबन्धित राज्यानि लक्षी किया है। उगाच्छा भूमि

उपर्युक्त विकाय विवरण देता है।

१५८८ वर्ष

प्रियोग

बालेन व कानिंह

प्रियोग

25000

25000  
एक

25000

25000

0400000051

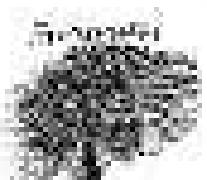


सह उत्तमा गद्दे था। जिसी न्यायिक सा राज्यकरी व्यवस्था के  
अन्तर्गत नियाम वा व्यवस्था नहीं है, न ही उन्हें अन्यादि है।  
विकलागम के अन्तर्गत उपर्युक्त नियमी अन्तर्गत व्यवस्था  
के राज्यकार्य नहीं हैं, एवं विकलागम को उपर्युक्त व्यवस्था  
अन्तर्गत रखने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। अतएव अपदायक सहस्रि  
की पहलीवर्षीय रुपा 16.25.266/- (सोलह लाख चालाइस रुपये  
तीन सौ छाला नाश्त रुपया) की प्रतिपत्ति पर नियमानुसारे  
द्वितीय इस विकलागम को इस विवेद के अन्त में दो गद्दे अनुदृष्टि  
में वाली इसि के अनुसार शुभानुश बत लिया गया है एवं नियमी  
प्राप्त वह विकलागम यहाँ स्थीकार करता है। तथानुसार अवल

द्वितीय इसि 266/-  
गद्दे

विकलागम  
वाली

विकलागम



भारतीय अमेरिका

RUPEES

25

पर्याप्ति 2000

पर्याप्ति 2500

INDIA NOTE INDIA

0300 306675

दिल्लीगढ़ नाम देना के इस उपरोक्त वार्षिक भूमि, विस्तर  
विवरण हरा विश्वाया गिरेला के अन्त में अनुच्छुदी के जल्दीता दिखा  
गया है, यह अनेक बेच दिया गई, इस विश्वेतागण ने विश्वचुदा सुन्धे  
गम जाले वह देना देना को बद्धी बता दिया गया है। एवं जल्दी  
शारीरी पर दिल्लीगढ़ नाम उसके विविध बना कर्वे अधिकार  
कर्त्ता है। दिल्लीगढ़ ने विश्वचुदा राष्ट्रिया को अपने राष्ट्राधिक के  
द्वारा अधिकारी के हाथ पूर्णता व हमेशा के लिए देना को  
हत्याकामित बत दिया है। अब इस विश्वचुदा नामान्तर में उसके  
प्रत्येक भाग को आगे एकमात्र व्यापिला व अधिकार व कर्त्ता में  
भूमिका के रूप में आए एवं उपरोक्त व उपरोक्त ऊर्ध्वों

जारी, देखें - देखें बनों

देखें देखें

देखें देखें

देखें देखें

R 200000

INDIAN JUDICIAL

R 200000

0000 316676

हिन्दू धर्म उसमें जीवी प्रकार की अनुचन वाला नहीं एवं सर्वो  
गुण न ही कोई मामा यत्ते अस्ति। और यही विश्वास्तु लगाली  
गया जोड़ आगे विश्वास्तु के व्यापित ने गुटि को खोदा था  
जबल्की अपने आ अपनी गुटि के कारण जैता था उनकी  
पारितान विष्वास्तु इष्टानी यो बन्धो आ विश्वास्तु वा उन्हें दे  
निकल जाने दो जैता उसके आठिसान, विष्वास्तु इष्टानी दो  
यह तक होता कि वह शायद जपता जुकामान पर्य उन्होंने व अर्थों  
विश्वास्तु की यह अपने सम्पत्ति से जारीये अदानत वस्तु के  
ले। जो विष्वास्तु ने विश्वास्तु इष्टाने आठिसान हुन्ही व अलौ  
का हुन् आज्ञा नीमा।

विश्वास्तु विश्वास्तु

विश्वास्तु विश्वास्तु

विश्वास्तु विश्वास्तु



यह कि उन्होंने चक्रवर्तुना सम्बले की शान्तिल आदि  
राजस्व अभिनेतरी में अपने नाम रखी थी। तो विक्रमादित्य के  
कानून आवाहन न दिया और यह कि इस विक्रम विक्रम के बारे वह  
आपने यांत्रे विक्रम विक्रमी नाम या भाई इस सम्बले पर होगा तो  
उन्होंने विक्रमादित्य भूमान य जहां करेगा, विक्रमादित्य को कोई  
आवाहन न दिया।

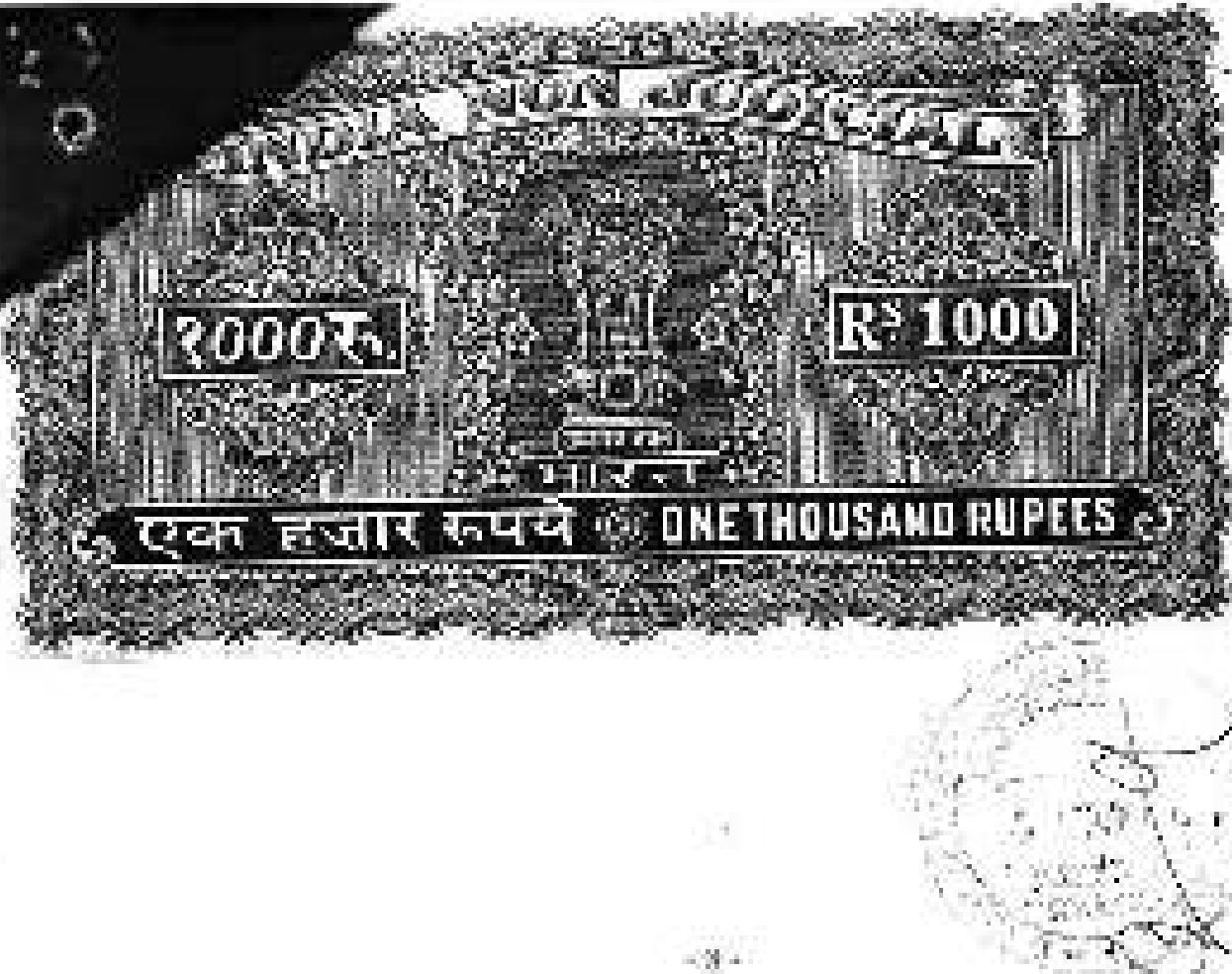
यह कि डाकोता लखाच नवार फ्राम मूलपाल नवार चुरावले,  
अपेक्षातीव देव के विक्रम यार के अन्तर्गत आता है इसीलिए  
निम्नालिख अवधित है रुपा 21.00 INR/- तकि हैक्सेस के द्वितीय  
विक्रम (विक्रम) 21.00 INR/-

विक्रम (विक्रम)

21.00 INR/-

विक्रम (विक्रम)

विक्रम (विक्रम)

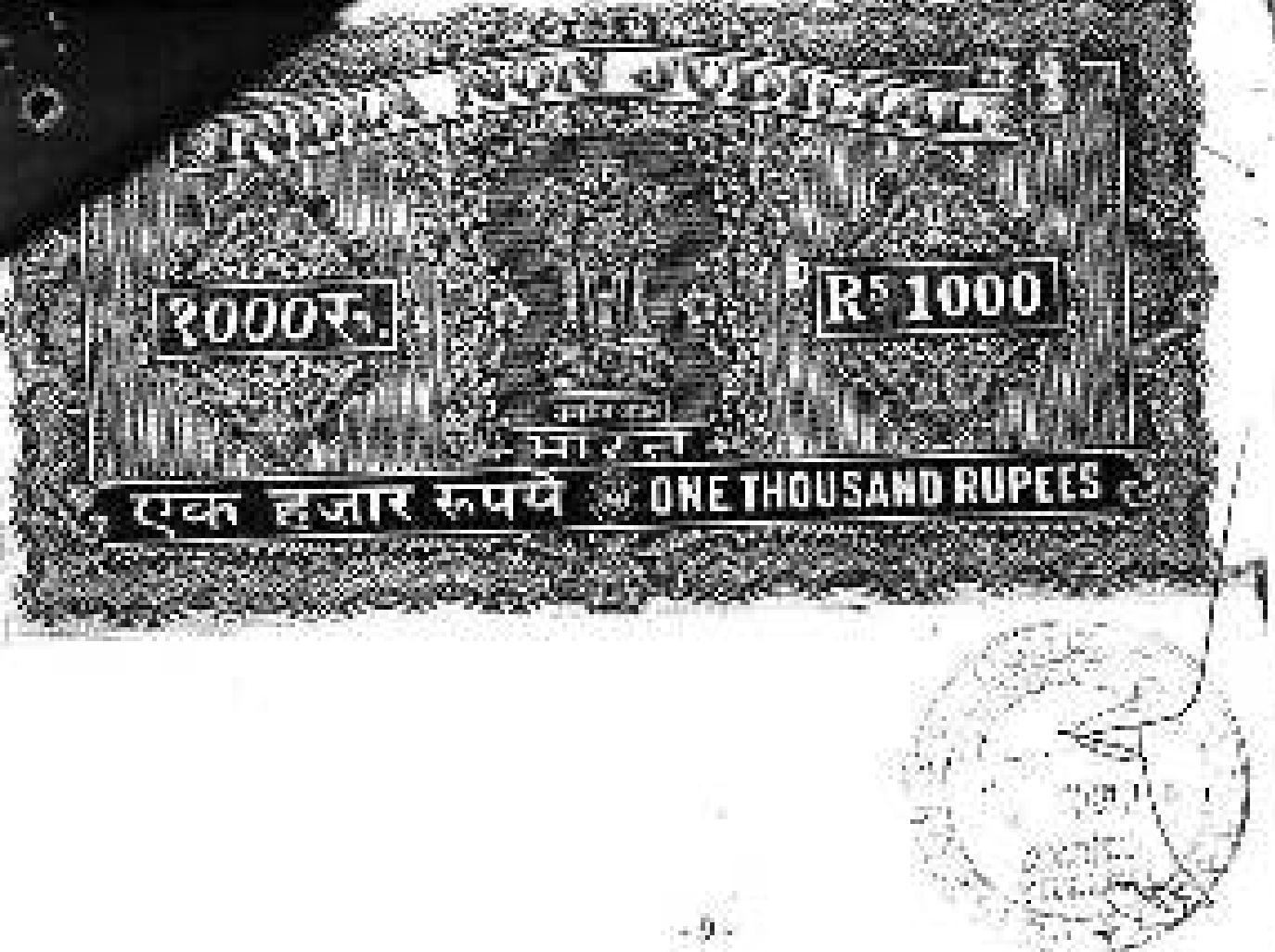


ले गिरीत भूमि ॥ ७६७ ॥ इंद्रेजात की पालियात ले १०.५२.३०५/-  
होते हैं। युक्त गोप्य गुप्त, भूमि वी बाजार मध्य से आधिक ६  
इकाइए लोकानुसार विलक्षण गुप्त गत श्री रु १५८.४००/-  
बनकर लगाय अब लिया जा रहा है। वह नि व्यापक गिरीत  
भूमि व्यवि को उपलोग के लिए काम की जा रही है। इस भूमि में  
पोर्ट चार्ड, लोकाय, व नियांग आदि जही है, तथा २०० मी० का  
अपन्नाह में लोह निर्गांग जही है गिरीत भूमि गिरीत नाम,  
राजसाह व जगदीश नाम यह लिख नहीं है। गिरीत भूमि  
लोकानुसार ज लगाय ५०० गीर्ह से आधिक छोटी गत लिया है।  
विशेषज्ञान व ग्रोता दोनों अनुद्दिष्ट जाति के ज़रूर हैं। इस  
गिरीत भूमि के लिए विशेषज्ञान

卷之三

• 115 •

卷之三



विश्वास द्वितीय के विषयम् एव ज्ञानात् लघु ग्रन्थां सहा वहनं विद्या  
गच्छते।

### परिचयः विवरणः विज्ञानरहस्याः समाप्तिः एव विषयम्

मूर्ख व्यक्ति नं १३१ राहगा ० भास फैलेश्वर, झज्जरा नं०  
१३० द्वयका ०.२८३ फैलेश्वर, झज्जरा नं १२८ राहगा ०.३०६  
हेंगेश्वर लुल रवाका ०.३६७ फैलेश्वर, विधिं द्वाम पुजारक्षन् नाम  
धूसवल, वरगांड-फैलेश्वर, गहानीलं ए लिला लद्दानक, विश्वासी  
चीहाद्दी निम्न है।

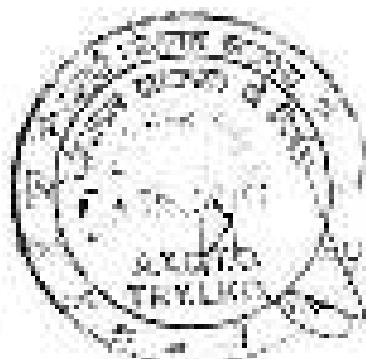
परिचयः विवरणः विज्ञानरहस्याः समाप्तिः एव विषयम्

पूर्वोत्तरांशः

पूर्वोत्तरांशः

पूर्वोत्तरांशः

500Rs



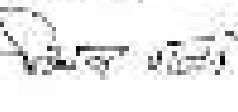
वर्तमान नं 131, दिनांक 2.12.1950 फूलपट्टा

पुस्तक	: भारतीय संस्कृति-130
पाठ्यपत्र	: भारतीय संस्कृति-132
ब्लॉग	: भारतीय संस्कृति-257
दृष्टिभाषा	: भारतीय संस्कृति-124

वर्तमान नं 130, दिनांक 2.27.8 फूलपट्टा

पुस्तक	: भारतीय संस्कृति 238
--------	-----------------------

पाठ्यपत्र	: भारतीय संस्कृति 131
-----------	-----------------------

प्राप्ति अनुमति - 

प्राप्ति -   
प्राप्ति का दिनांक

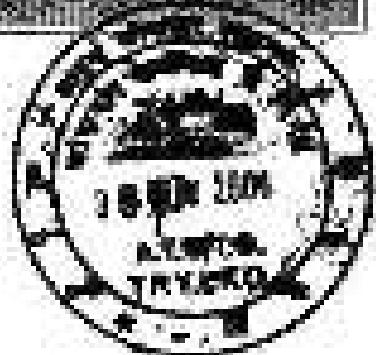


100Rs

200F

Rs 100

एक सौ रुपये ONE HUNDRED RUPEES



- 11 -

उत्तर : असारा संख्या-157

दक्षिण : असारा संख्या-124

व्यापार नम्बर 128, ट्रॉफ़ि ०.३०८ किलोग्राम

पूर्व : असारा संख्या-259, 260

पश्चिम : असारा संख्या-127

पश्चिम : असारा संख्या-124

दक्षिण : पाथ गीया केनामक

प्रोटोकॉल नं. १५७५८ प्र० १८८५

प्र० १८८५

प्र० १८८५

प्र० १८८५

प्र० १८८५

100 Rs



### प्रतिरिक्ष : भूमिकाएँ विवरण

भूमि विवरन मूल्य विस्तारान्वय को ₹ ०० १८,२७,७६६/-  
टीलिंग शाखा समाइंद्र लाल साह जी आडवा मारह लगाडा, लाल  
विधार पेक फेता से प्राप्त हुए तथा भिटामी पारित विस्तारान्वय  
विवरन यहां है।

लिखा यह विवरन प्रति इस विस्तारान्वय से छोटा के पहुंच में  
सापेक्ष गवाहन विना विकली जाते रखाव के, वा स्थल्य विल व अन  
विवरन निम्नान्वय है—  
विवरन विवरन  
विवरन विवरन

लाल विवरन

लाल विवरन

विवरन



13-

को कहा गे लिल दिया ताकि सरद रहे और  
आगराकाला पहने पर याज थाम।

लस्ताना

दिनांक: 08.12.2004

माना

रामेश्वर मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश सरकार

मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश सरकार  
मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश सरकार

रामेश्वरा  
(रामेश्वरा)

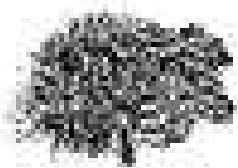


मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश  
मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश

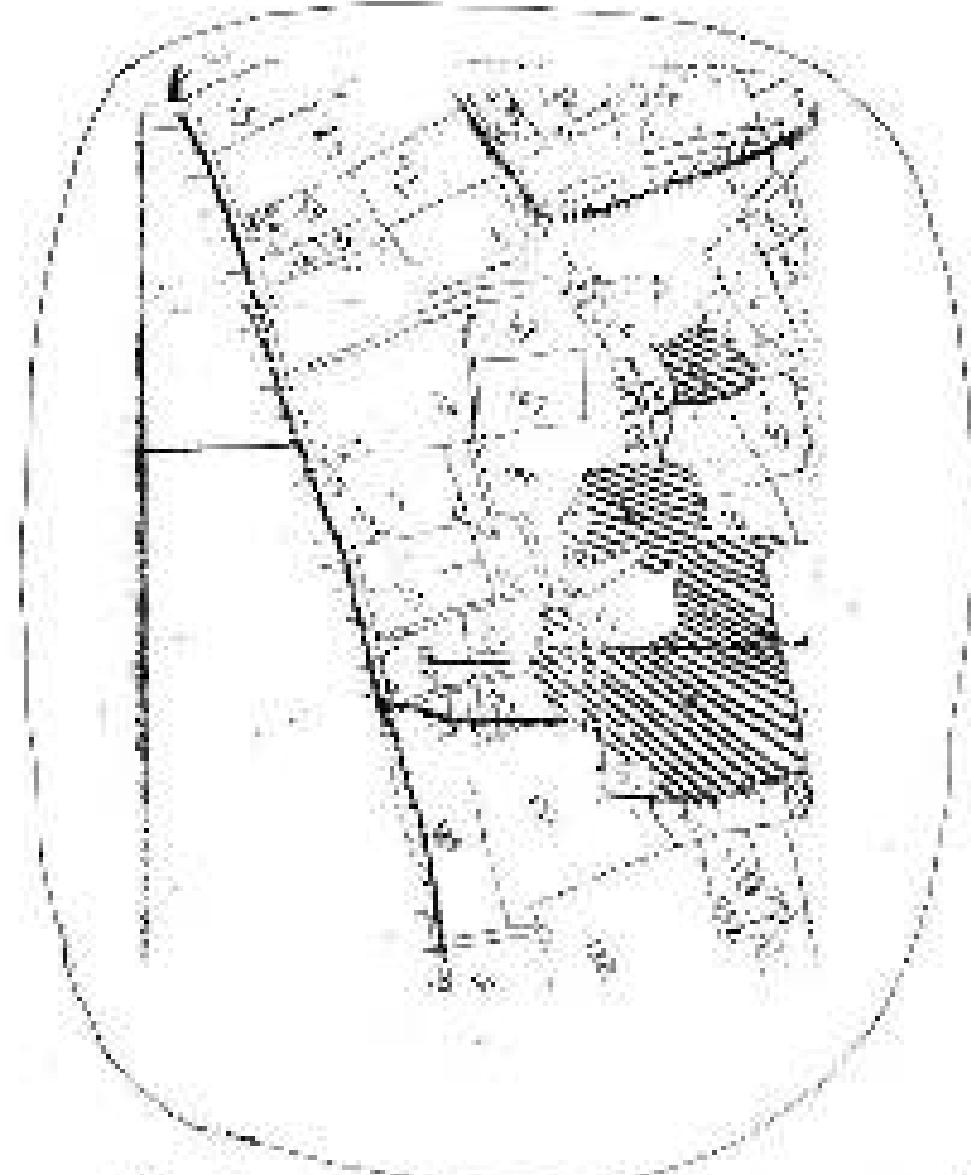
मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश  
मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश



मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश  
मुख्य सचिव  
उत्तर प्रदेश सरकार



1920 - 1921 - 1922 - 1923 - 1924



Chlorophyll

Phyco-

bilin  
carotene  
chlorophyll  
carotenoids

Chlorophyll

Carotenoids

बंगाल राज्य सभा की विधान सभा 1938 की धारा 32०, के अनुसार

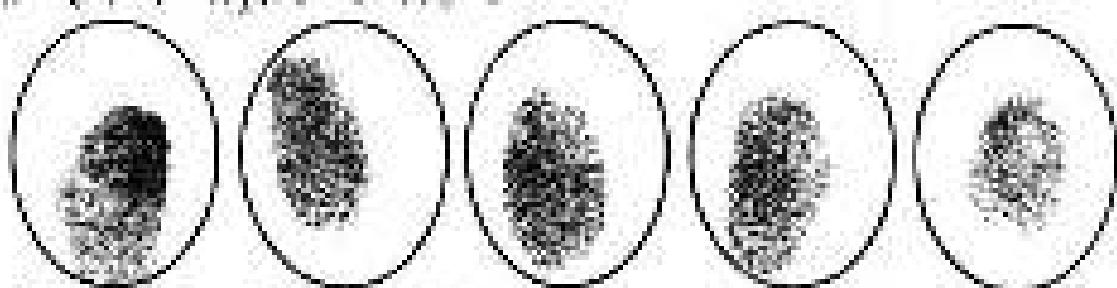
लेटु फिल्म प्रिंट्स

प्रधानमंत्री को नम रखा :

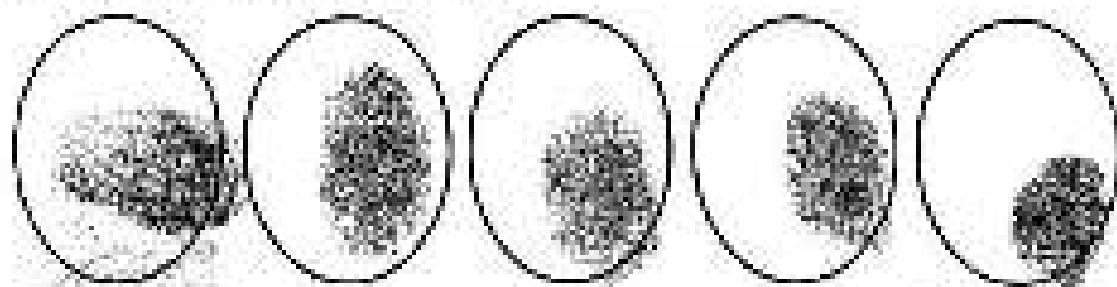
प्रधानमंत्री

प्रधान राष्ट्र के अधिकारी के बिना

देश और भारत के लिए बहुत



प्रधान राष्ट्र के अधिकारी के बिना

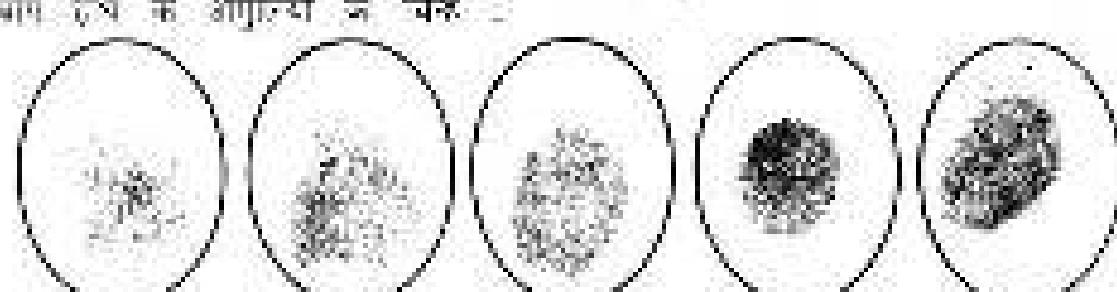


प्रधानमंत्री को नम रखा :

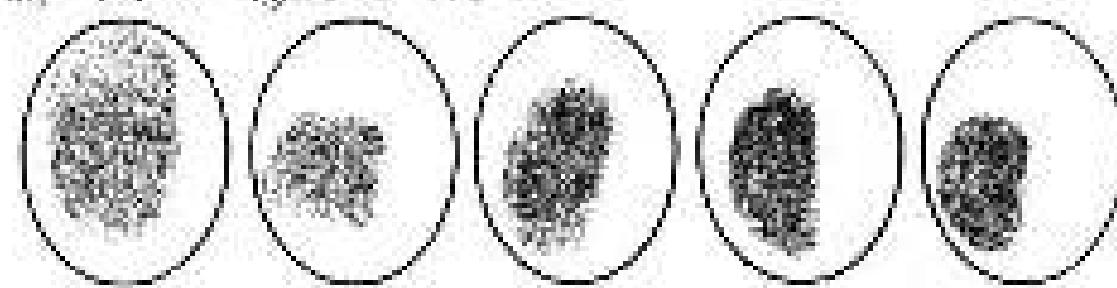
प्रधानमंत्री

प्रधान राष्ट्र के अधिकारी के बिना

प्रधानमंत्री



प्रधान राष्ट्र के अधिकारी के बिना



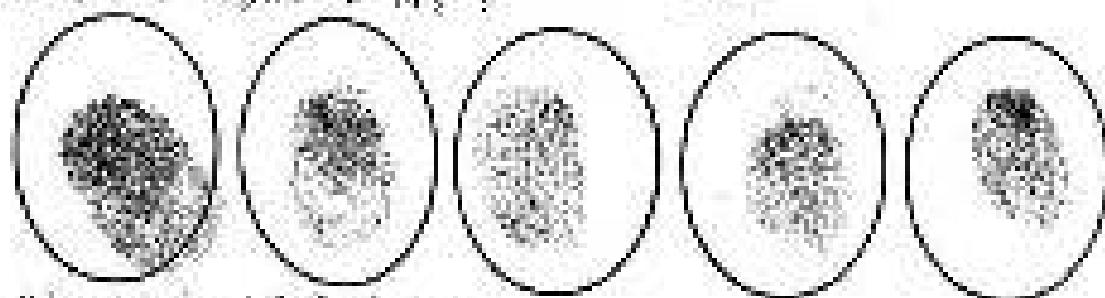
प्रधानमंत्री के दलाल

प्रधानमंत्री

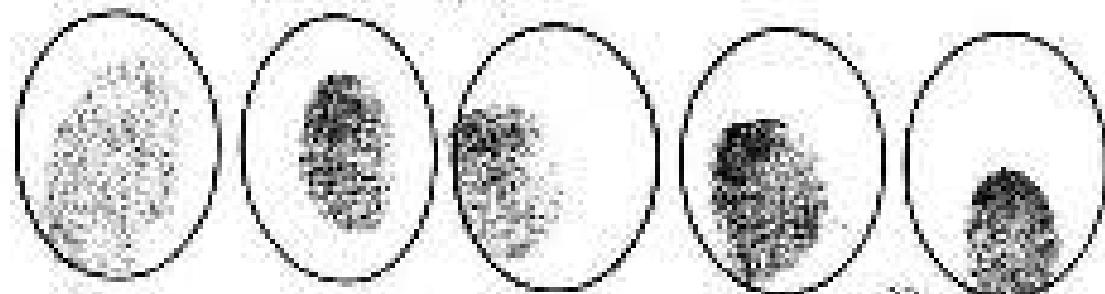
सन् १९३८ न अधिनियम १९३८ को धारा ३२ए. के अनुसार इन फोटों परिस्थि

प्रत्यक्षकर्ता/विकास का राज व प्रभा : उत्तराखण्ड सरकार

लाप्ते होने के अनुसारी के लिए :



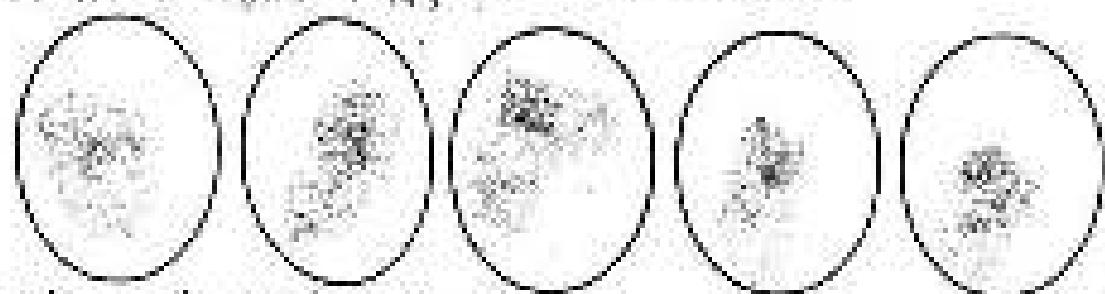
इन दारों के अनुसारी के लिए :



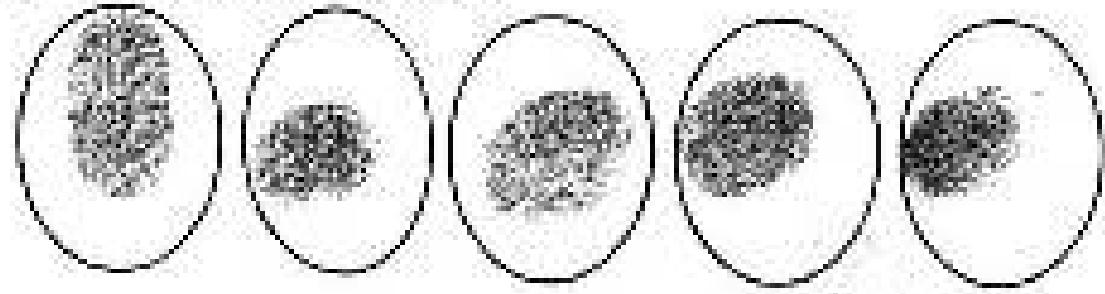
प्रत्यक्षकर्ता/विकास के अनुसार

प्रत्यक्षकर्ता/विकास का राज व राज : उत्तराखण्ड सरकार

लाप्ते होने के अनुसारी के लिए :



इन दारों में अनुसारी के लिए :



विकासकर्ता के लाभ

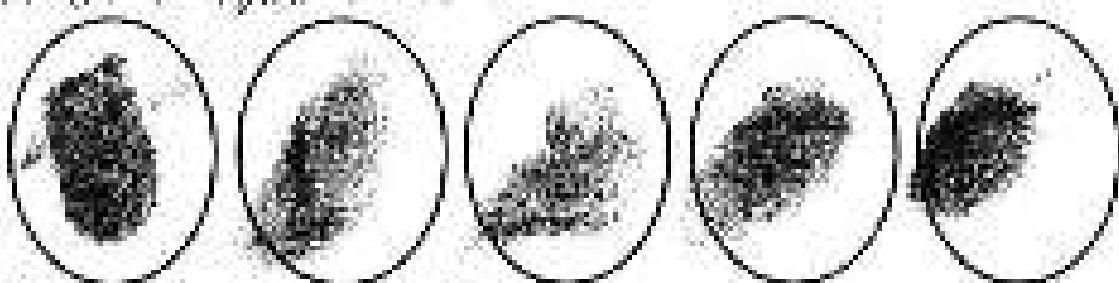
उत्तराखण्ड सरकार

संवलन्त्रशान अधिनियम १९०४ की खाता ३२८ के अनुयालन  
हें, फिरासे प्रिन्टम्

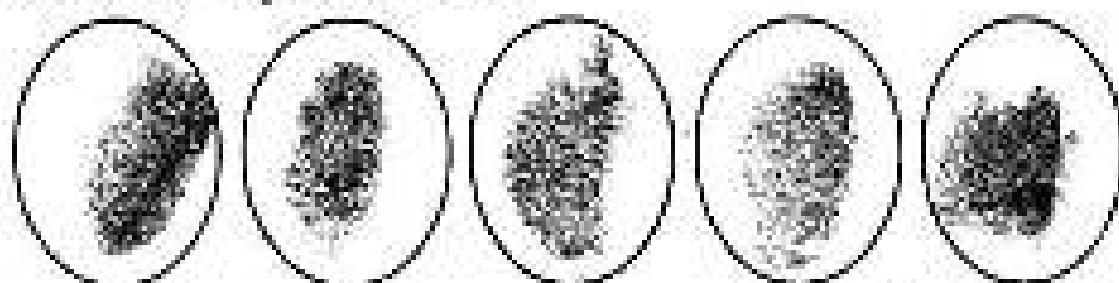
प्रत्यक्षकारीमित्रों जो नन्द व राजा - अनोद्धर अनुद्धर

क्षेत्र गोदावरीमें

वाय शब्द के अंगृहियों के लिए -



दूसरे शब्द के अंगृहियों के लिए -

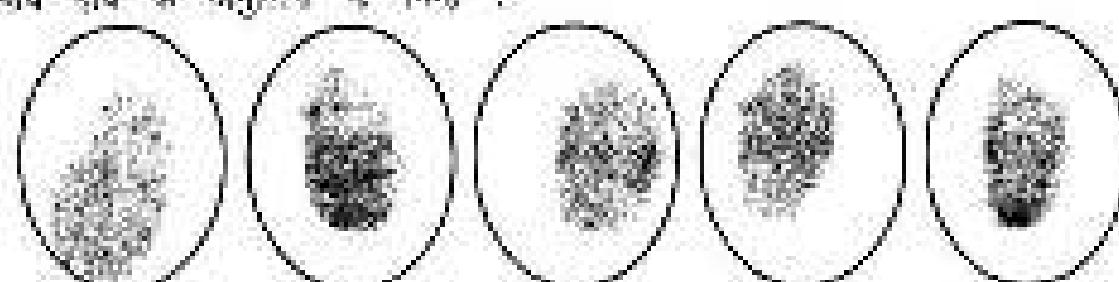


संग्रह दोष  
प्रत्यक्षकारीमित्रों के लिए वाय शब्द - संग्रह दोष

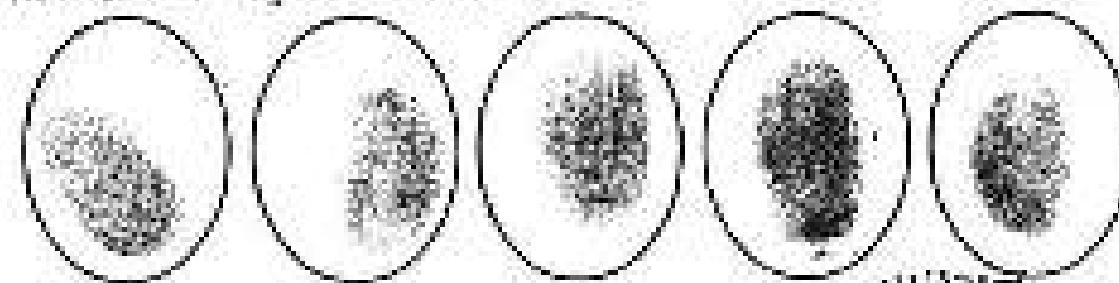
प्रत्यक्षकारीमित्रों के लिए वाय शब्द - संग्रह दोष

क्षेत्र गोदावरीमें

वाय शब्द के अंगृहियों के लिए :



दूसरे शब्द के अंगृहियों के लिए :

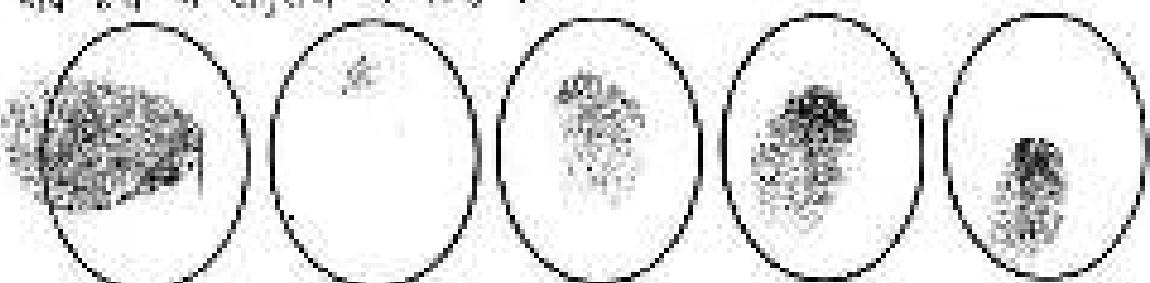


संग्रह दोष  
प्रत्यक्षकारीमित्रों के लिए

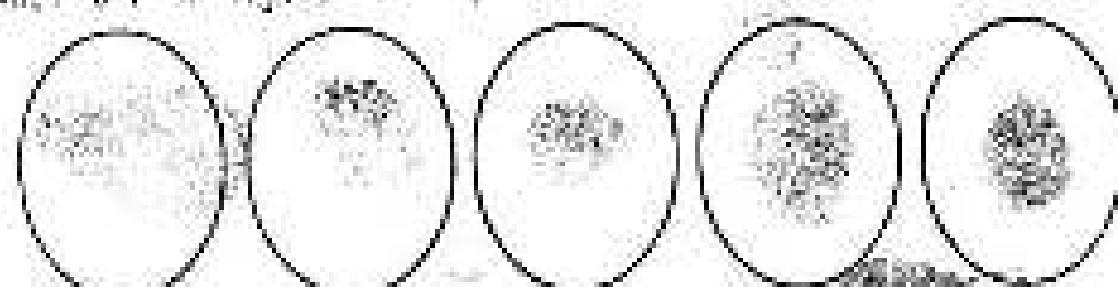
राजस्थान वाधिकारियम् 1909 की धारा 32ए. के अनुपालन  
हेतु फिंगर्स्प्रिन्ट

अधिकारी/क्रमांक वा नाम व पता : — श्रीकृष्ण  
कृष्णजीला गोदावरी

लाल हथ के अंगूष्ठों के लिए :



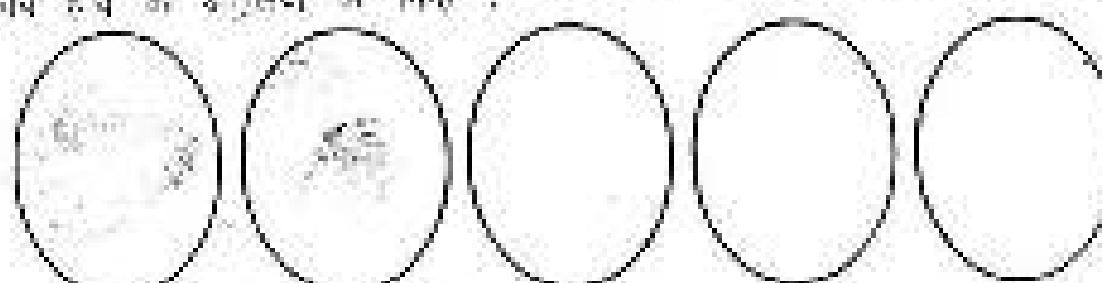
यादि हथ के अंगूष्ठों के लिए :



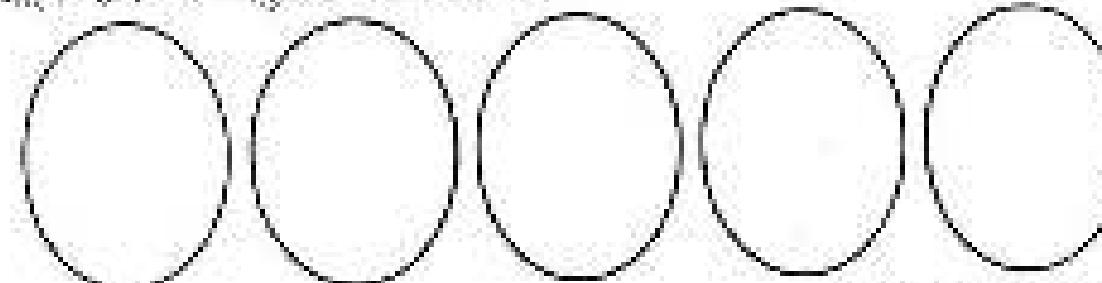
प्रस्तुतकारी/विवरणकारी वाहन का छाप।

अधिकारी/क्रमांक वा नाम व पता : — श्री रमेश

लाल हथ के अंगूष्ठों के लिए :



यादि हथ के अंगूष्ठों के लिए :



प्रस्तुतकारी/विवरणकारी वाहन का छाप।

ଶ୍ରୀ ପଟ୍ଟନାୟକ  
ମହାନ୍ତିର  
ପଦବୀ  
ପଦବୀ

ପଦବୀ (ଫର୍ମ)

ପଦବୀ